कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ...... चित्रकला ......

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 158/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जायेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) सूत्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्राप्तांक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) छः दन्त जातक कथा :- यह चित्र गुफा संख्या 10 अजन्ता में स्थित है। इसमें बुद्ध को एक हाथी के रूप में चित्रित किया गया है जिनकी 2 रानियाँ है। वे नदी के किनारे रहते थे उनकी एक रानी ईर्ष्यावश मरकर एक राजा की रानी बनी। रानी ने छः दांतो वाले हाथी के दांत पाने के इच्छा व्यक्त की। सैनिको ने हाथी के दांत रानी को दिए तो उसे पूर्व जन्म याद आ गया तथा अपने प्राण त्याग दिये। इसमें हाथियों का चित्रण सुन्दर है।

(2) भारत में प्रागैतिहासिक काल के चित्र सिंघनपुर, मिर्जापुर, भीमबेटका, पचमढ़ी, चक्रधरपुर, होशंगाबाद आदि स्थानो में मिले है। इनके अतिरिक्त रीवा, पन्ना, छतरपुर, कटनी, सागर बस्तर, ग्वालियर आदि स्थानो पर भी प्रागैतिहासिक काल के चित्र प्राप्त होते है।

(3) शाहजहाँ कालीन दो चित्रकार निम्न प्रकार से है - (i) उस्ताद फकीर उल्लाह, (ii) मीर हाशिम।

(4) 'भारतमाता' नाम चित्र के चित्रकार का नाम अवनीन्द्रनाथ ठाकुर है तथा इस चित्रकार की एक कृति रूपावली है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(5) प्रागैतिहासिक चित्रों का समय 50,000 वर्ष से 5,000 वर्ष ईसा पूर्व माना गया है

(6) अजन्ता गुफा चित्रों में हाथी पशु को प्रधानता दी गई है।

(7) गोलकुण्डा चित्र शैली दक्षिणी शैली से संबद्ध है।

(8) कम्पनी शैली के दो प्रमुख चित्रकार निम्न है - (i) हुलासलाल, (ii) सुमकलाल।

(9) गोवर्धनलाल जोशी 'बाबा' के चित्र प्रमुखत: भील जाति के दैनिक जीवन की गतिविधियों के विषय पर आधारित है।

(10) अमृता शेरगिल के दो चित्र निम्न प्रकार से है - (i) वधू का श्रृंगार, (ii) गणेश पूजा

(11) अकबर ने हुमाँयु कालीन प्रसिद्ध चित्रकारी मीर सैय्यद अली - जुदाई ख्वाजा अब्दुस्समद शिराजी से चित्रकारी करने का अभ्यास किया।

(12) राजा रवि वर्मा के दो चित्रों के नाम निम्न है - (i) उषा अनिरुद्ध, (ii) समुद्र का मान मर्दन करते हुए राम।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

13) "वायनाड - के - एडकल" :- यह दक्षिण भारत में स्थित है। यहाँ पर जादू-टोने से सम्बन्धित चित्र अधिक मात्रा में मिलते हैं। यहाँ से स्वास्तिक चिन्ह, षट्कोण, त्रिभुज, सूर्य आदि के चित्र प्राप्त होते हैं। आदिमानव ने प्राकृतिक आपदाओं से बचने व शिकार आदि में अपनी सफलता दर्शाने या सफलता पाने के चित्र जादू-टोने के चित्र बनाये। इन गुफाओं के चित्रों में पशुओं के चित्र बर्छे आदि से बिंधे मिले हैं। इन चित्रों में लाल, काला व सफेद रंगों का अधिकता से प्रयोग हुआ है। यहाँ के चित्र स्पेन के गुफा चित्रों से मिलते-जुलते हैं।

14) "बणी-ठणी" नामक चित्र किशनगढ़ शैली में चित्रित है। यह चित्र राजा सावन्तसिंह के काल में उसके प्रमुख चित्रकार मोरध्वज निहालचन्द द्वारा बनाया गया था। यह चित्र लघु चित्र शैली में बना है। इसमें बणी-ठणी के बायें हाथ में कमल की दो कलियां लगी हुई एक डंठल है। तथा दांये हाथ की दो अंगुलियों से वह घुंघट कर रही है। चित्र में विस्तारित नेत्र, चापाकार भौंहे, इकहरी चिबुक, बालों की लट कान के पास से निकली हुए चित्रित हैं। चित्र लियोनार्डो दी विन्सी की कृति मोनालिसा के समकक्ष माना गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(15) पहाड़ी चित्र शैली :— पहाड़ी कला का जन्म पंजाब व हिमाचल की सुरम्य घाटियों में हुआ। कांगड़ा, गुलेर व बसोहली इसके प्रमुख केन्द्रों में से है। पहाड़ी कला का जन्म गुलेर से 1760 ईस्वी से माना जाता है। पहाड़ी शैली में वैष्णव धर्म का प्रमुख स्थान है। रीतिकालीन कवियों में सुर, तुलसी, केशव, मतिराम, बिहारी आदि के काव्यों पर आधारित चित्र बनाये गये। पहाड़ी कला का सर्वप्रथम विभाजन डॉ. आनन्दकुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक राजपूत पेंटिंग में किया था। उन्होंने इसे दो भागों उत्तरी जम्मू व दक्षिणी कांगड़ा में विभाजित किया। पहाड़ी शैली के प्रमुख आश्रयदाताओं में बसोहली के राजा कृष्णपाल, गुलेर के राजा गोवर्धनचन्द, चम्बा के उम्मेदसिंह व कुल्लू के प्रितमसिंह थे। इनके प्रमुख चित्रकार मानकू, खुशाला, किशनलाल, बसियाँ, परखू, फत्तू आदि थे।

(16.) 'शिव का विष पान' नामक चित्र के चित्रकार का नाम नन्दलाल बसु है। इस चित्र मे भगवान शिव को विष पीते हुए चित्रित किया गया है। चित्र में रेखांकन अत्यधिक सुन्दर ढंग से किया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गया है। चित्र एक आश्रम में बनाया गया है। चित्र में शिव द्वारा एक हाथ से विष पीते हुए चित्रण है। उन्हे सिर व गले में कुछ पहने चित्रित किया गया है।

(17) भारत के तीन समसामयिक चित्रकारो के नाम निम्न प्रकार से हैं :-
(i) के. के. हब्बार (ii) जगदीश स्वामीनाथन,
(iii) भावेश चन्द सान्याल।

(18) "समुद्र का मान मर्दन करते हुए राम" नामक चित्र राजा रवि वर्मा ने बनाया था। यह चित्र तेल रंग विधि से बनाया गया है तथा यह रामायण का एक अंश दर्शाता है। इस चित्र में राजा राम हाथ में धनुष-बाण लिये हुए समुद्र को सुखाने की तैयारी में है। गम्भीर व क्रोधित राम समुद्र देवता को सबक सिखाने की मुद्रा में दृष्टव्य है। सामने समुद्र देवता प्रकट होकर राम से क्षमा याचना करते हुए चित्रित हैं। छाया प्रकाश का सुन्दर चित्रण हुआ है। समुद्र लहरो को ऊपर उठते हुए चित्रित किया गया है। चित्र संयोजन अत्यन्त कुशल है व आसमान में काले घुंघराले बादल चित्रित किये गये हैं।

(19) कृपालसिंह शेखावत :- कृपालसिंह शेखावत का जन्म 1928 में श्रीमाधोपुर जिले के मऊ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गांव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उदयपुर व अजमेर में हुई। इन्होंने अनेक दृश्यों का चित्रण किया जैसे मजदूर किसान आदि। इन्होंने अनेक देशों की यात्रा की तथा ब्ल्यू पॉट्री पर अनेक राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। इन्होंने पार्थ सारथी नामक चित्र का भी सुन्दर अंकन किया। ब्ल्यू पॉट्री में नीले पात्रों में नीले रंग के धरातल पर अनेक चित्र चित्रित किये। उनकी विभिन्न तत्वों के सामंजस्य वाली शैली को कृपालपाल शैली के नाम से जाना जाता है।

(20) प्रागैतिहासिक कालीन चित्रो के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार से है :-

(i) अपने चारो ओर के वातावरण की स्मृति को बनाये रखना :- आदिमानव अपने आस-पास के वातावरण को याद रखने के लिए चित्र बनाता था।

(ii) प्रकृति पर अपनी विजय को दर्शाना- आदिमानव जादू-टोने करके अपने आप को सुरक्षित महसूस करता था तथा प्रकृति पर विजय पाने के लिए चित्र बनाता था।

(iii) अमूर्त भावना को मूर्त रूप देने की वृति :- आदिमानव ने अपनी कल्पना को साकार रूप देने के लिए चित्रों का निर्माण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

किया।

(iv) जादू-टोने में विश्वास :- आदिमानव ने अपने आप को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने के लिए चित्रों का निर्माण किया जिसमें सूर्य, षट्कोण आदि के चित्र प्रमुख हैं।

(v) भावी पीढ़ी को शिक्षित करने एवं इतिहास कायम करने के लिए :- आदिमानव ने आने वाली भावी पीढ़ी को शिकार आदि करने में शिक्षित करने के लिए चित्रों का सहारा लिया।

(vi) सफलता पाने एवं भय को दूर करने के लिए :- आदिमानव ने जंगली जानवरों का शिकार करने में सफलता पाने के लिए जादू-टोने के चित्रों का सहारा लिया।

(थ) 'मरणासन्न राजकुमारी' :- यह अजन्ता की गुफा संख्या सोलह में चित्रित चित्र है। इसमें राजकुमारी की भाव भंगिमा, मुद्रायें व आलस्य में डूबी देह यम के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में है। सेविकाएँ सेवारत हैं। चारों ओर जीवन के प्रति निराशा के बादल आच्छादित हैं। चित्र में राजकुमारी को निम्न प्रकार की मुद्रायें लिए चित्रित किया गया है- गिरती हुई पलकें, भरते हुए नेत्र, लटकते हुए बाहु, झुकती हुई गर्दन आदि।
इस चित्र को विद्वानों ने भावना, करुणा तथा कला चातुर्य की दृष्टि से सबसे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सुन्दर माना है।

(23) बौद्ध चित्रकला से सम्बंधित प्रमुख तीन केन्द्रो के नाम निम्न प्रकार से है -
(i) ~~अजन्ता~~ अजन्ता (ii) ~~बाघ~~ बाघ (iii) ~~जोगीमारा~~
~~जापान~~ ~~इण्डोनेशिया~~ श्रीलंका

(24) बौद्ध कालीन चित्रों का विद्वानों ने समय ~~200 वर्ष ईसा पूर्व के लि पूर्व~~ 2 शताब्दी से 6 वी शताब्दी तक माना है। (i) अजन्ता - 200 वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर 6ठी शताब्दी तक, (ii) बाघ - चौथी शताब्दी।

(25) "बाबर सोन नदी पार करते हुए" नामक चित्र अकबर कालीन प्रसिद्ध चित्रकार जगन्नाथ ~~मिस्किन~~ ने किया था। इसमें अनेक नावों का चित्रण एक नदी को पार करते हुए चित्रित किया गया है। इसमें एक बड़ी नाव पर ऊँचे सिंहासन पर बाबर को बैठे हुए चित्रित किया गया है। इस नाव में कुछ नाविक व सैनिक चित्रित है। एक नाव में एक घोड़े को भी चित्रित किया गया है। एक नाव में एक व्यक्ति मगरमच्छ पर निशाना साधते हुए चित्रित किया गया है। व्यक्तियों को अनेक कार्य करते हुए चित्रित किया गया है जैसे चप्पु चलाते हुए, छत्र लिये हुए, शिकार करते हुए। चित्र में उफनती हुई

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

नदी को चित्रित किया गया है। पुरुषों को अकबर कालीन शैली में एक चश्म व सवा चश्म में चित्रित किया गया है। उनको जामा - पाजामा व कमरबंध बांधे चित्रित किया गया है तथा बाबर भी इसी वेशभूषा में चित्रित है।

अकबर कालीन चित्रों की विशेषताएँ :- अकबर कालीन चित्रों में राजस्थानी, ईरानी व कश्मीरी शैलियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। चित्रों में चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया है तथा रेखाएँ गोलाई लिये हुए चित्रित है। चित्रों में एक चश्म व सवा चश्म चेहरे बनाये गये है। वस्त्रों में पाजामा, जामा, लम्बा पटका व पगड़ियाँ चित्रित की गई है। चित्रों में शबीह चित्र अधिक बने है। महीन व बारीक रेखांकन किया गया है तथा प्राकृतिक दृश्यों का स्वाभाविक अंकन हुआ है।

26) प्रागैतिहासिक चित्रों की विशेषताएँ निम्न प्रकार से है :-

(i) विषय वस्तु :- आदिमानव द्वारा बनाये गये चित्रों का प्रमुख विषय आखेट ही रहा था। आदिमानव ने जंगली जानवरों के चित्र बनाये जैसे बारहसिंघा, हिरण, हाथी खरगोश, सांड, जंगली भैंसा, सुअर आदि। उसने जादू - टोने के चित्र भी बनाये। इसमें

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मनुष्यों को कार्य करते हुए भी चित्रित किया गया है।

(ii) रेखा प्रधान चित्र :- प्रागैतिहासिक काल के चित्र रेखा प्रधान है। मात्र कुछ ही रेखाओं से सम्पूर्ण मनोभावों को व्यक्त कर दिया गया है। चित्रों में कुरेदकर व दिवारो को पत्थर आदि औजारो से काट - छांट कर चित्र का सृजन हुआ।

(iii) भावना प्रधान चित्र :- प्रागैतिहासिक काल के चित्र आदिमानव के अनुभवों के सांकेतिक नमूने है। चित्र भावनात्मक व कलात्मक दृष्टि के अनुसार चित्रित किए गये है।

(iv) रंग :- प्रागैतिहासिक मानव ने लाल, काला व सफेद रंगो का प्रमुखता से प्रयोग किया है। कही - कही रामरज, गेरू, हिरोंजी व खड़िया का प्रयोग भी हुआ है। कोयला व काजल भी प्रयुक्त किए गये रंग है।

(v) तूलिका :- प्रागैतिहासिक काल में तूलिका बांस की लकड़ी के एक सिरे को कूटकर बनाई जाती थी तथा रंग भरने के लिए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मरे हुए जानवर की पुट्ठे की प्याली काम में ली जाती थी।

(vi) शैली - प्रागैतिहासिक काल के चित्रों की शैली आदिमानव के जीवन के आन्तरिक उल्लास व आवेश से पूर्ण है। शैली यथार्थता पूर्ण है।

(vii) परिक्षय व छाया प्रकाश :- आदिमानव के चित्रों में छाया - प्रकाश का अंकन कही नही हुआ है। व वातावरणीय क्षय वृद्धि का अंकन भी नही किया गया है।

(27) राजा सावंत सिंह किशनगढ़ शैली के संरक्षक व प्रवर्तक थे। उनकी रुचि शासन व्यवस्था सम्भालने में न होकर चित्रकला व संगीत कला में थी। उनके समय में अनेक चित्रो का निर्माण हुआ जिनमें राधा - कृष्ण से सम्बंधित चित्रों का अधिक निर्माण हुआ। उन्हे शुरु से ही विभिन्न कलाओं के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ा। उनके प्रमुख चित्रकारों में मोरध्वज निहालचन्द था। उन्होंने इसमें बनी ठनी नामक चित्र का चित्रण करवाया जो बहुत सुन्दर था। इन्होंने अपने दरबारी चित्रो से लेकर अनेक ग्रन्थो व काव्यों से सम्बंधित चित्र बनवाये। इन्होंने चित्रकारो को प्रोत्साहन दिया। इन्हे नागरी नामक सेविका के प्रेम में पड़ जाने

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

के कारण नागरीदास उपनाम से जाना जाता है। नागरी इतनी सुन्दर थी कि उसे राधा का प्रतीक मानकर चित्रकारों ने किशनगढ़ में राधा का चित्रण अनेक रूपों में किया तथा राजा सावन्तसिंह को कृष्ण का प्रतीक मानकर अनेक चित्रों का निर्माण हुआ। इसके प्रमुख चित्रकार अमीरचन्द, धन्ना, भंवरलाल, सूरध्वज, मोरध्वज निहालचन्द नानकराम, सीताराम व अमरू आदि थे। अतः राजा सावन्त सिंह का समय किशनगढ़ कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण था।

(28) अजन्ता गुफा चित्रों की विषय-वस्तु :
अजन्ता गुफा चित्रों की प्रमुख विषय वस्तु महात्मा बुद्ध के जन्म-जन्मान्तर की जातक कथाएँ थी जिनमें मानव -चर-अचर पक्षी-पशु मनुष्य सभी कला का विषय बन गये है। राज दरबारों का चित्रण भी हुआ है। चित्रों का विषय धार्मिक होते हुए भी सांसारिक प्रतीत होता है। चित्रों मे सभी प्रकार के जीवों जिनमे भगवान बुद्ध ने अवतरण लिया चित्रित हुए है चित्रों में उनके प्रत्येक जन्म मे जन्म लेने के उपरान्त किये गये राजसी जीवन व जीव-जन्तु के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

रूप में परोपकार के लिए शरीर दान करने से सम्बंधित चित्र बने।

संयोजनात्मक पक्ष :- चित्र में संयोजन दर्शाने के लिए कई आकृतियों को एक साथ चित्रित किया है जिनमें प्रत्येक बार बुद्ध की आकृति सबसे विशाल व सुन्दरता लिये हुए चित्रित है। चित्र में केन्द्रत्व के लिए बुद्ध को विशाल चित्रित किया गया है। चित्रों में फूल, पत्ते, टहनी आदि सभी में उचित संयोजन के दृश्य देखे जा सकते हैं। सभी संयोजन अपूर्व व सुन्दर प्रतीभा के प्रतीक हैं।

(29) बंगाल चित्र शैली की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं :-

(i) बंगाल चित्र शैली की के चित्र बौद्धिक विचार, स्वदेश प्रेम व तात्कालिक परिस्थितियों के परिणाम थे।

(ii) बंगाल शैली के प्रेरणा स्त्रोत अजन्ता, राजस्थानी व मुगल शैली से सम्बंधित चित्र थे।

(iii) चित्रों का प्रमुख विषय भारत की प्राचीन गौरवमय आदर्शों तथा भारतीय काव्य स्त्रोतों तथा ग्रामीण परिवेश से सम्बंधित थे।

(iv) चित्रों में रेखांकन के महत्व को पुनः प्रतिष्ठित किया गया जिससे कलाकार स्वतंत्र होकर प्राकृतिक चित्रों का चित्रण सुन्दरता के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

साथ करने लगे।

(v) बंगाल शैली के चित्रों में वाश पद्धती से चित्रण हुआ जिससे सुन्दर चित्रों का निर्माण हुआ तथा चित्र संयोजन सुन्दर व विस्तार हुआ।

(vi) बंगाल शैली में टेम्परा रंग पद्धति को अपनाया गया। इसमें धूसर आभा वाला रंग सीधे सपाट रूप में भरे जाते थे तथा आकृति को उभारने के लिए रेखांकित कर दिया जाता था।

(vii) चित्रों में जापानी पद्धती व चीनी पद्धति का सम्मिश्रण करके चित्रों का निर्माण प्रारम्भ हुआ।

(viii) नन्दलाल बोस, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार व यामिनी राय ने टेम्परा पद्धति को अपनाया।

(ix) चित्रों में ग्रामीण चित्रण पद्धति के चित्रों का निर्माण व प्रकृति चित्रण हुआ।

(30.) यामिनी राय :- यामिनी राय का जन्म सन् 1887 में पश्चिम बंगाल के बेलियातोर जिले के बालेर गांव में हुआ। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा कलकत्ता में प्राप्त की। 1921 में बंगाल की लोककला व बिहार के पट चित्रण ने उनके चित्रों को प्रभावित किया। उन्होंने यूरोपीयन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कला को भी अपनाया।
यामिनी राय के प्रमुख चित्र ईसामसीह व श्रृंगार है।
यामिनी राय के चित्रों का प्रदर्शन 1953 में ए.सी.ए. गैलेरी न्यूयार्क में प्रदर्शित की गई। उन्होंने कपड़े, कागज़, पट्टे व चटाई पर नवीन प्रयोग किये। तथा प्रदर्शनी में इन्ही पर चित्र चित्रित थे तथा इसी धरातल का प्रयोग किया।
उनके चित्रों में सरलता, सरसता व सपाट रंगों का प्रयोग किया गया तथा चित्रों में मोटी व गहरी रेखाओं का प्रयोग प्रमुख रूप से किया गया है।
उन्हें उनके सुन्दर चित्रों के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें पद्मभूषण आदि प्रमुख है।

माँ और बेटा :- यह चित्र यामिनीराय द्वारा बनाया गया था इसमें मोटी रेखाओं के द्वारा चित्र में उभार दिखाया गया है। इसमें सपाट व कम चमकदार रंग प्रयुक्त हुए है। चित्र में माँ अपने पुत्र को गोद मे लिए हुए चित्रित है। चित्र में रेखांकन सुन्दर व स्वभाविक है। दोनों आकृतियाँ ऐसी लगती है जैसे दोनों चित्र में फीट बैठ गयी हो। चित्रमें भूरे रंग का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है व लाल रंग प्रमुख है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

यामिनी राय ने अपने बारें में स्वयं लिखा है कि मैं बाल सुलभ कला से प्रेरित हूँ।

(22) 'जगदीश स्वामीनाथन' के चित्रों के कलात्मक गुण :— जगदीश स्वामीनाथन का जन्म शिमला में हुआ ये पूर्व रूप से तमी तमिल थे। इन्होंने अनेक सुन्दर चित्र बनाये जिनमें ग्रामीण जीवन के चित्र प्रमुख रूप से सम्मिलित है। इन्होंने कलाविद्या में डिप्लोमा करने के बाद उसी विद्यालय के प्राध्यापक बनकर अजन्ता के चित्रों व अन्य चित्रों के बारें में अधिक जानकारी प्राप्त की। इन्होंने अनेक देशों की यात्राएं भी की। इन्होंने मछुआरो, नाविको व श्रमिको के चित्रों का निर्माण किया। इन्हें भोपाल कला भवन का अध्यक्ष नियुक्त किया। इन्होंने वहाँ रूपंकर कला संस्थान खोला तथा अपने जीवन में श्रमिकों, मछुआरे के साथ बिताये चित्रों का निर्माण किया। इन्होंने कादम्बरी, महाभारत, रामायण आदि विषयो पर सुन्दर चित्र बनाये उनके प्रमुख चित्रों में श्रृंगार, श्रमिक, माँ बेटा, शीव मुखाकृति, पक्षी, खेत में महिलाए, बिल्ली आदि है।